मातृभाषा

मातृभाषा माँ की दी हुई भाषा है क्योंकि जन्म के बाद भाषा सीखने का जब क्रम शुरू होता है तो सबसे पहले हम जो भाषा सीखते हैं वह मातृभाषा ही होती है। भाषा के अन्य रूपों का नाम बाद में आता है।

मातृभाषा के प्रसंग में विचार करते हुए सबसे पहले उसका अर्थ हमारे सामने आता है कि भाषा से हमारा पहला साक्षात्कार माँ के माध्यम से होता है। अतः माँ की जो अपनी भाषा होती है वही भाषा हमें से प्राप्त होती है। अतः पहला अर्थ यह हुआ कि मातृभाषा माँ की भाषा होती है। और शिशु माँ से ही सर्वप्रथम भाषा- शिक्षण प्राप्त करता है। अतः यह शब्द माँ की भाषा "अर्थ की दृष्टि" से सार्थक है।

द्वितीय बात यह कि बच्चा सबसे अधिक माँ के सम्पर्क में होता है। माँ उसे दूध पिलाते, प्यार करते, हँसाते - खेलाते, रोने पर चुप कराते हर पल अपने शब्दों से संतान का उपचार करती है। बच्चा माँ की उन्हीं ध्वनियाँ को सुनता है और उन्हीं का अनुकरण उम्र बढ़ने के साथ करता है। अतः माँ से भाषा सीखते हुए वह उसे भाषा के प्रति आन्तरिक राग से जुड़ जाता है। यह भाषा-राग या भाषा प्रेम माँ की भाँति ही प्रिय होता है। अतः वह अपनी मातृभाषा के प्रति वैसा ही अनुराग अनुभव करता है। जैसा अनुराग अपनी माँ के प्रति अनुभव करता है। अतः माँ के समान प्रिय होने के कारण यह भाषा मातृभाषा कहलाती है।

मातृभाषा की कुछ विशेषताएँ होती है इन विशेषता को निम्न रूप से प्रस्तुत कर रहा हूँ।

डॉ. बलराम कुमार
हिन्दी विभाग
एल.के.डी. कॉलेज ताजपुर
समस्तीपुर

बलराम कुमार

Scanned with CamScanner

(क) भाषा के जितने प्रकार या रूप होते है उनमें सबसे पहले हमें मातृभाषा ही प्राप्त होती है। अतः भाषा के विविध प्रकारों में से महत्व तथा सीखने की प्राथमिकता के आधार पर मातृभाषा प्रथम स्थानीय होती है। अर्थात् हम सबसे पहले मातृभाषा सीखते है।

(ख) मातृभाषा की शिक्षा बच्चे को क्रमशः प्राप्त होती है और स्वाभाविक रूप में प्राप्त होती है। इसका अर्थ यह है कि मातृभाषा सीखने में हमें बहुत प्रयास नहीं करना पड़ता है और न एक बार सीखना पड़ता है। हम जैसा-जैसा सयाने होते हैं वैसे-वैसे परिवार और समाज के साथ चलते-फिरते उठते-बैठते मातृभाषा सीखते चले जाते हैं।

(ग) मातृभाषा का व्याकरण शिथिल होता है और इसका व्याकरण अलग से व्याकरण पढने के भाँति पढना या सीखना नहीं पड़ता है। अतः मातृभाषा में वाक्य के स्तर पर बोलने के क्रम में यदा कदा क्रम अव्यवस्थित हो जाता है। जैसे - क्या तुम पटना जाओगे के बदले तुम जाओगे क्या पटना अथवा तुम क्या पटना जाओगे भी बोल देने से कोई अन्तर नहीं पड़ता। इसी तरह जिन भाषाओं में लिंग, वचन, कारक आदि की सत्ता होती है उन भाषाओं के बोलने वाले प्रायः नियमानुसार नहीं बोलते हैं। इसके रूप वहाँ देखा जाता है जहाँ लोग किसी मानक भाषा रूप को अपनी मातृभाषा के अनुसार तोड़-मरोड़ देते हैं। जैसे -

1. वह जायेगा ही — ऊ जएबे करेगा।
2. वह आ ही तो रहा है। — वह आइए तो रहा है।

(घ) मातृभाषा का स्वरूप प्रायः मानक नहीं होता है। उसमें एक ही प्रयोग के कई रूप होते हैं। मातृभाषा प्रायः बोली के अंतर्गत आती है।

"चार कोस पर पानी बदले
आठ कोस पर बानी"